आर.एन.आई. पंजीयन क्र. 39596/82 (डाक पंजीयन MP/IDC/1462/2016-2019)

साप्ताहिक

मालव अँचल

वर्ष 47 अंक 02 (प्रति रविवार) इंदौर, 01 अक्टूबर से 07 अक्टूबर 2023 पृष्ठ-8 मूल्य 3 रुपये

पीएम मोदी की अपील पर

देशभर में एक साथ चला स्वच्छता अभियान, लाखों लोगों ने किया श्रमदान

विभिन्न शहरों में महात्मा गांधी को देश के लोगो ने दी स्वच्छांजलि

नई दिल्ली। पीएम नरेन्द्र मोदी की अपील पर रविवार को एक साथ देशभर के लाखों लोगों ने स्वच्छता अभियान में हिस्सा लिया। पीएम की राष्ट्रव्यापी स्वच्छता अभियान की अपील पर नेताओं, अभिनेताओं से लेकर छात्रों तक, सभी क्षेत्रों के लोगों ने रविवार को एक घंटे के श्रमदान में हिस्सा लिया। केंद्रीय आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय के अनुसार, इस अभियान के तहत देशभर में 9.20 लाख से अधिक स्थानों पर स्वच्छता कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। गौरतलब है कि आकाशवाणी के मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' की पिछली कड़ी में पीएम मोदी ने सभी नागरिकों से एक अक्टूबर को 'स्वच्छता के लिए एक घंटे का श्रमदान' करने की अपील में कहा था कि महात्मा गांधी की जयंती की पूर्व संध्या पर यह 'स्वच्छांजलि' होगी। इस दौरान श्रमदान करने के लिए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने झाड़ू लेकर अहमदाबाद में स्वच्छता अभियान में हिस्सा लिया। वहीं, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा दिल्ली के झंडेवालान इलाके में इस अभियान में शामिल हुए। इस दौरान देशभर में केंद्रीय मंत्रियों और भाजपा नेताओं ने झाड़ू उठाकर 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान में हिस्सा लिया।

गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल, भाजपा सांसद दिनेश शर्मा ने भी एक स्वच्छता अभियान में हिस्सा लिया। भारतीय वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी भी स्वेच्छा से शामिल हुए।

दिल्ली नगर निगम ने भी राजधानी में 500 स्थानों पर सफाई अभियान चलाया। केंद्रीय आवास और शहरी मामलों के मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने लोगों से इस अभियान में शामिल होने का आग्रह करते हुए 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, 'आइए, एक नया इतिहास बनाएं! आज सुबह 10 बजे। आइए एक घंटे के लिए स्वयंसेवक बनें, स्वच्छता के माध्यम से महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दें। शामिल होने के लिए स्थानीय स्वच्छता कार्यक्रमों को स्कैन करें या देखें।

वहीं क्रिकेट के दिग्गज विराट कोहली और रोहित शर्मा जैसे क्रिकेट खिलाड़ियों ने भी लोगों से 'एक तारीख, एक घंटा, एक साथ' के लिए साथ आने और स्वच्छता के प्रति संकल्प को मजबूत करने के लिए सबसे बड़े नागरिक नेतृत्व वाले आंदोलन में शामिल होने की अपील की। केंद्रीय मंत्री मीनाक्षी लेखी ने कहा, 'हम उम्मीद करते हैं कि लोग स्वच्छ भारत मिशन से जुड़े रहेंगे, जिसे प्रधानमंत्री मोदी ने लॉन्च किया था।' लखनऊ में 'स्वच्छता पखवाड़ा' में हिस्सा लेने वाले उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने कहा कि प्रधानमंत्री की अपील पर देशभर में इस तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। उन्होंने सभी से इस अभियान में हिस्सा लेने की अपील की।

2000 के नोट बदलने की मियाद एक हफ्ते बढ़ी

नोटों से बदलने की तारीख 7 अक्टूबर तक बढ़ा दी

नई दिल्ली। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया यानी आरबीआई ने 2000 रुपए का नोट बैंक में जमा करने या दूसरे नोटों से बदलने की तारीख 7 अक्टूबर तक बढ़ा दी है। आरबीआई ने कहा कि चूंकि विड्रॉल प्रोसेस का तय समय खत्म हो गया है। रिव्यू के बेस पर 2000 रुपए के नोट को जमा और बदलने की मौजूदा व्यवस्था को 7 अक्टूबर 2023 तक बढ़ाने का निर्णय लिया गया है। इससे पहले आरबीआई ने इसी साल 19 मई को एक सर्कुलर जारी करके 30 सितंबर तक 2000 के नोट बैंकों में जमा करने या बदलने के लिए कहा था। बैंकों से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 19 मई 2023 तक कुल 3.56 लाख करोड़ रुपए मूल्य (वैल्यू) के 2000 रूपए के नोट प्रचलन में थे। इसमें से 29 सितंबर तक 3.42 लाख करोड़ रूपए वैल्यू के नोट वापस आ चुके हैं। अब सिर्फ 0.14 लाख करोड़ रूपए की वैल्यू के नोट बाजार में हैं।

उत्तर प्रदेश में डूबती नजर आ रही 'इंडिया' की नाव

कांग्रेस को 5 से ज्यादा सीट नहीं देगी सपा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' जमीन पर उतरने से पहले ही विवादों के जाल में फंसती दिख रही है। पेंच सीट शेयरिंग को लेकर फंसने वाला है। एक तरफ 'इंडिया' की बैठकों में यूपी में विपक्ष का चेहरा अखिलेश यादव को बताया जा रहा है, दूसरी तरफ सहयोगी दलों के बीच सीटों को लेकर महाभारत छिड़ने के आसार साफ दिखने लगे हैं। कल अखिलेश ने ऐसा ही बयान दिया जिस पर राजनीतिक चर्चाओं का दौर शुरू हो गया है। अखिलेश ने साफ-साफ कहा है कि प्रदेश में समाजवादी पार्टी 'इंडिया' से सीटें मांगेगी नहीं, बल्कि अपने सहयोगियों को सीटें देगी। सूत्रों के अनुसार सपा ने कहा कि वह प्रदेश में कांग्रेस को पांच से ज्यादा सीटें नहीं देने वाली। यूपी चुनाव 2022 की तर्ज पर समाजवादी पार्टी की कोशिश लोकसभा में तमाम राजनीतिक दलों को अपनी छत्रछाया में चुनाव लड़ाने की है।

एक देश, एक चुनाव के लिए करने होंगे संविधान में अहम बदलाव

नई दिल्ली। एक देश, एक चुनाव को लेकर पूरे देश के राजनीतिक गलियारों से लेकर आम जनता की बैठकों में तगड़ी बहस जारी है. इन बहसों के बीच लॉ कमीशन के चेयरपर्सन रितु राज अवस्थी ने इसको लेकर बड़ी टिप्पणी की। उन्होंने कहा, एक देश में एक चुनाव कराने से पहले सरकार को संविधान में कुछ अहम बदलाव करने होंगे। रितु राज अवस्थी कर्नाटक हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश हैं और 22वें विधि आयोग के अध्यक्ष भी हैं। सरकार ने विधि आयोग को यह जिम्मेदारी सौंपी है कि वह एक ऐसी प्रक्रिया के बारे में सरकार को बताए जिससे देश में होने वाले चुनाव को एक लाइन में लाया जा सके।

नारी शक्ति वंदन अधिनियम को राष्ट्रपति ने दी मंजूरी

बना कानून लोस और विधानसभाओं में महिलाओं को मिलेगा 33 प्रतिशत आरक्षण, संसद के विशेष सत्र में दोनों सदनों में पारित हुआ था विधेयक

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने महिला आरक्षण विधेयक यानी नारी शक्ति वंदन अधिनियम को अपनी मंजूरी दे दी है। इसके तहत लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण का प्रविधान है। शुक्रवार को जारी कानून मंत्रालय की अधिसूचना के अनुसार, राष्ट्रपति ने इस पर अपनी सहमति दे दी। सरकार ने हाल में 18 से 22 सितंबर तक संसद का विशेष सत्र बुलाया था। उसी दौरान यह ऐतिहासिक महिला आरक्षण विधेयक दोनों सदनों में पास हुआ और इसे मंजूरी के लिए राष्ट्रपति को भेजा गया था। इसके प्रविधान के अनुसार, यह उस तारीख से लागू होगा, जब केंद्र सरकार राजपत्र में अधिसूचना द्वारा इसे निर्धारित करेगी। संविधान संशोधन विधेयक को लोकसभा ने 20 सितंबर को लगभग सर्वसम्मति से पारित किया था। इसके विरोध में सिर्फ दो वोट पड़े थे जबकि इसके पक्ष में 454 वोट पड़े थे। राज्यसभा ने इसे 21 सितंबर को सर्वसम्मति से पारित किया था। इसके पक्ष में 214 वोट पड़े थे जबकि विरोध में एक भी मत नहीं पड़ा था।

2024 के लोस चुनाव बाद शुरू होंगी प्रक्रियाएं- वैसे, इस कानून को लागू होने में अभी समय लगेगा, क्योंकि इसमें प्रविधान है कि अगली जनगणना और उसके बाद परिसीमन प्रक्रिया (लोकसभा और विधानसभा क्षेत्रों का पुनर्निर्धारण) के बाद यह मान्य होगा। 2024 के लोकसभा चुनाव के बाद ही ये प्रक्रियाएं शुरू होंगी। लोकसभा और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए कोटा 15 साल तक जारी रहेगा और संसद बाद में इस अवधि को बढ़ा भी सकती है। बता दें कि 1996 के बाद से संसद में महिला आरक्षण से जुड़े विधेयक को पारित कराने के लिए कई प्रयास हुए। आखिरी बार ऐसा प्रयास 2010 में किया गया था, तब राज्यसभा में महिला आरक्षण विधेयक पारित हो गया था, लेकिन यह लोकसभा में अटक गया था। फिलहाल लोकसभा में महिला सांसदों की संख्या लगभग 15 प्रतिशत है जबकि कई राज्य विधानसभाओं में उनका प्रतिनिधित्व 10 प्रतिशत से भी कम है।

संपादकीय

कर्ज के मकड़जाल में फंसते जा रहे हैं राज्य

अधिकांश राज्य कर्ज के मकड़जाल में फंसते जा रहे हैं। हर साल राज्यों पर कर्जा बढ़ रहा है। राजस्व का बड़ा हिस्सा ब्याज के रूप में राज्यों को चुकाना पड़ रहा है। कर्ज़ अदाएगी में भी राज्यों की बहुत बड़ी राशि सरकारी खजाने से जा रही है। जिसके कारण अब विकास कार्यों पर इसका असर स्पष्ट रूप से पड़ने लगा है। मध्य प्रदेश सरकार के ऊपर भी लगातार कर्ज बढ़ रहा है। मिजोरम सरकार ने तो हद कर दी। मिजोरम सरकार ने पूरे साल में जो कर्ज की सीमा थी, उससे डेढ़ गुना ज्यादा कर्ज अभी ले लिया है। उसके बाद तेलंगाना का नाम आता है। तेलंगाना भी बड़े पैमाने पर कर्ज ले रहा है। तीसरा नंबर मध्य प्रदेश राज्य का है। जिसने अप्रैल वहां से लेकर अगस्त माह तक 5500 करोड रुपए का कर्ज लिया है। दिसंबर 2023 की तिमाही के पहले 15000 करोड रुपए का कर्ज सरकार और लेने जा रही है। मध्य प्रदेश में इसी वर्ष नवंबर माह में विधानसभा चुनाव होना है। चुनाव के लिए मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान जैसे राज्य कर्ज लेकर चुनाव कराने के लिए विवश हो रहे हैं। पिछले तीन वर्षों में अधिकांश राज्यों के ऊपर कर्ज का बोझ बढ़ता ही चला जा रहा है। जिन राज्यों में चुनाव हो रहे हैं। उन राज्यों की सरकारों ने कई लोक लोभावन योजनाएं घोषित की हैं। उसके लिए उन्हें अतिरिक्त राशि की जरूरत है। सरकारी खजाने में राशि उपलब्ध नहीं है। इसके बाद भी चुनाव जीतने के लिए चुनाव वाले राज्यों में सरकार रेवडियां बाट रही हैं। चुनाव के पहले ही लोगों को राहत पहुंचने के लिए सरकार कर्ज लेने में कोई कुताही नहीं बरत रही हैं। पिछले एक दशक में राज्यों ने नए-नए टैक्स लगाए हैं। राज्य सरकारों की पिछले वर्षों में जीएसटी की आय भी तेजी के साथ बढी है। इसके बाद भी राज्य सरकारें बड़े पैमाने पर कर्ज ले रहे हैं। राज्यों की आर्थिक हालात दोनों दिन खराब होती जा रही है। सरकारी खजाने से कर्ज की अदाएगी और ब्याज के रूप में बहुत बड़ी राशि खजाने से खर्च करनी पड़ रही है। जिसके कारण सभी राज्यों का वित्तीय संकट दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा है। यह अकेले एक राज्य के बारे में नहीं कहा जा सकता है। सभी राज्यों की आर्थिक स्थिति दिनों दिन खराब होती जा रही है। गुजरात कर्नाटक और महाराष्ट्र ऐसे राज्य हैं। जिन्होंने इस वर्ष कोई नया कर्ज नहीं लिया है। इनके अलावा लगभग सभी राज्य कर्ज के मकडजाल में फंस चुके हैं। राज्यों की आर्थिक स्थिति दिनों दिन खराब होती जा रही है। जीएसटी और अन्य करों के रूप में राज्य अपने नागरिकों पर पहले ही बहुत टैक्स लगा चुके हैं। पेट्रोल डीजल में बड़े पैमाने पर उपभोक्ताओं से टैक्स की वसूली की जा रही है। इसके बाद भी राज्यों की आर्थिक स्थिति खराब होना और लगातार कर्ज का बोझ बढ़ना चिंताजनक है। ऋण के मामले में राज्य और केंद्र सरकार एफआरबीएम एक्ट के प्रावधानों का भी पालन नहीं कर रहे हैं। 15वें वित्त आयोग ने वर्ष 2021 से 2026 के लिए जो रोड मेप तैयार किया था। उसका पालन नहीं करते हुए केन्द्र एवं राज्य ज्यादा कर्ज ले रहे हैं। कोविड काल के दौरान इसमें संशोधन किया गया था। उसके बाद से तय सीमा से अधिक कर्ज लेने की व्यवस्था चली आ रही है। राज्यों द्वारा मांग की जा रही है कि लोक ऋण की सीमा को बढ़ाया जाए। वर्तमान में जीडीपी का 5.9 फ़ीसदी केंद्र सरकार के लिए और राज्यों के लिए तीन फ़ीसदी निर्धारित है। राज्यों द्वारा अपनी निर्धारित सीमा से अधिक ऋण लेने के कई राज्यों के मामले सामने आ चुके हैं। केंद्र सरकार द्वारा लगातार राज्यों को समझाइए दी जा रही है, कि वह केंद्र से मिलने वाली राशि पर निर्भर नहीं रहे। राज्यों को अपनी आय स्वयं बढ़ानी होगी। अन्यथा वह वित्तीय संकट में फंस सकते हैं। 2003 के बाद से लगातार राज्यों की वार्षिक आय बड़ी तेजी के साथ बढ़ रही है। राज्यों का प्रशासनिक एवं लोकलुभावन योजनाओं का खर्च बढ़ रहा है। केंद्र सरकार ने केन्द्रीय योजनाओं में राज्य सरकारों का अंशदान बढ़ा दिया है। जिसके कारण भी राज्य सरकार वित्तीय संकट में फंस रहे हैं। जिन राज्यों में डबल इंजन की सरकारें है। उन राज्यों की परेशानी भी डबल है। केंद्र सरकार से राज्यों को अपेक्षाकृत आर्थिक सहायता नहीं मिल पा रही है। केंद्र की योजनाओं को चलाने के लिए राज्यों के पास पर्याप्त धन खजाने में उपलब्ध नहीं है।

क्या कुर्सी की खातिर सब कुछ गवां दिया जाये

कुर्सी क्या इतनी महत्वपूर्ण वस्तु बन गयी है कि उसके पीछे लोग अपना सब कुछ गवां देने पर उतारु हैं ये सवाल आपके मन में आये या न आये किन्तु मेरे मन में बार-बार आ -जा रहा है। कनाडा से बिगाड़ के बाद अब पड़ौसी मालदीव से भी हमारे लिए अच्छी खबर नहीं आ रही ।मालदीव में इंडिया आउट का नारा देने वाले चीन समर्थक उम्मीदवार मुइज़्ज़ू राष्ट्रपति का चुनाव जीत गए हैं।मालदीव जनसंख्या और क्षेत्र, दोनों ही प्रकार से एशिया का सबसे छोटा देश है।और 1965 में आजाद हुआ है।

मालदीव है तो इस्लामिक देश किन्तु भारत के साथ मालदीव के रिश्ते पारम्परिक और भौगोलिक रूप से नए नहीं है। मालदीव की आजादी के पहले से भारत का मालदीव के घरेलू मामलों में दखल रहा लेकिन अचानक भारत ने मालदीव की उपेक्षा करना शुरू कर दी नतीजा ये हुआ कि अब मालदीव चीन की और झुका चुका है। भारत बीते एक दशक से मालदीव के अंदरूनी मामलों में हस्तक्षेप करने से बच रहा है. इसका सीधा फायदा चीन को मिलता दिख रहा है। राष्ट्रपति शी जिनपिंग जब भारत आए थे तब वे मालदीव और श्रीलंका होते हुए आए थे। दोनों देशों में मैरीटाइम सिल्क रूट से जुड़े एमओयू पर हस्ताक्षर किए गए लेकिन जब राष्ट्रपति शी जिनपिंग भारत आए तो इस मुद्दे पर पूरी तरह से चुप्पी रहा।

एक जमाना था जब दक्षिण एशिया को लेकर भारतीय विदेश नीति बेहद आक्रामक थी । ये स्थिति राजीव गांधी सरकार से लेकर नरसिम्हा राव सरकार तक रही। भारत ने साल 1988 में मालदीव में तख्तापलट की कोशिशों को नाकाम किया। लेकिन इसके बाद से भारत का प्रभाव बेहद कम होता गया है। इसके स्थानीय कारण भी हैं क्योंकि मालदीव के पूर्व राष्ट्रपति मामून अब्दुल गयूम भारत के अच्छे दोस्त थे। ये दोनों देशों के बीच गहरे संबंध का कारण था। भारत का प्रभाव इस क्षेत्र में कम हुआ है लेकिन ये कमी चीन के बढ़ते प्रभाव की वजह से ज़्यादा दिखाई पड़ती है।

भारत के खिलाफ खड़ा होने वाला मालदीव एक नया देश है। पाकिस्तान ,श्रीलंका,नेपाल,बांग्लादेश ,अफगानिस्तान में इन दिनों भारत का नहीं चीन का डंका बज रहा है । सुदूर कनाडा तक में भारत विरोधी खालिस्तानी आंदोलन ने नए सिरे से सर उठा लिया है और हम हैं कि हमें अपनी विदेशनीति की समीक्षा करने की आवश्यकता ही महसूस नहीं हो रही । हम इस मुद्दे पर कभी घर के भीतर आपस में बैठकर बात ही नहीं करना चाहते । विपक्ष से हमारा अनबोला है। पड़ौसियों से भी हमारा अनबोला बढ़ता ही जा रहा है।

हमारी हर नीति में अदावत और अकड़ भर गयी है । विदेश नीति को भूल भी जाइये तो घरेलू नीति में भी हम अपने रिश्तों में कड़वाहट भरते जा रहे है। कितनी हैरानी की बात है कि तेलंगाना में राजनीतिक अदावत की वजह से तेलंगाना के मुख्यमंत्री केसीआर लगातार छह बार प्रधानमंत्री की अगवानी करने तक नहीं गए। ये कौन सी सियासत है । भारत एक गणराज्य है ,स्वायत्तता सबके लिए महत्वपूर्ण है । एक प्रधानमंत्री की जिम्मेदारी है की वो कम से कम देश के भीतर तो कुर्सी की खातिर रंजिशें न पाले। आज जो तेलंगाना में हो रहा है वो सब पहले पश्चिम बंगाल में हो चुका है । बंगाल की मुख्यमंत्री को अपमानित करने का कोई मौक़ा प्रधानमंत्री जी नहीं छोड़ा।

कभी-कभी देश के भविष्य को देखकर चिंता और घबड़ाहट होती है। हम न देश के भीतर सामंजस्य स्थापित कर पा रहे हैं और न देश के बाहर। ऊपर से त्रुरा ये है कि हम विश्व मित्र बन गए है। मौजूदा हालात को देखकर तो ये लगता है की हम विश्वमित्र नहीं विश्वशत्रु बन गए हैं। हमारा शत्रुता का स्वभाव हमसे सब कुछ छीने ले रही हैं। हम न अपनी अकड़ छोड़ने को राजी हैं और न सौजन्य बनाने के लिए। हम अहंकार के आठवें आसमान पर हैं। जहां हमारे बराबर कोई दूसरा है ही नहीं।

कनाडा तो चलिए सात समंदर पार है लेकिन नेपाल और मालदीव तो हमारे आसपास है। हमारी भौगोलिक सीमाएं इन दोनों देशों से जुडी है। इन दोनों देशों में भारत विरोधी माहौल बना हुआ है । भूटान जैसे देश से हमारे पारम्परिक दोस्ताना रिश्ते बिगाड़ पर हैं। श्रीलंका हमारे न प्रभाव में है और न दबाब में। बांग्लादेश हमें रोज अपनी अनदेखी का उलाहना दे रहा है। अब हमारे सिर पर न लाल टोपी है और न पांवों में जापानी जूता। हमारी इंग्लिस्तानी पतलून का भी आता-पता नहीं है।फिर भी हम हिन्दुस्तानी हैं। अलग-थलग पड़ते हिंदुस्तानी । हम अपने पारम्परिक मित्र खोते जा रहे हैं और नए मित्र हमसे बनाये नहीं जा रहे। न घर के भीतर और न घर के बाहर। हमारी तमाम नीतियों का ही नतीजा है कि पंजाब फिर से उड़ता दिखाई दे रहा है। और इस सबके पीछे एक दिल्ली की कुर्सी है। हम कुर्सी को लात नहीं मार सकते। दोस्ती को लात मार सकते हैं। लगातार मार रहे हैं।

देश इस समय जिन दुर्दिनों से गुजर रहा है उनकी चर्चा करना भीअब राष्ट्रद्रोह है। हम गांधी के भारत हैं। हमारी पहचान ही सहिष्णुता और संभव है ,जिसे अब संकीर्णता और अदावत में बदल दिया गया है। मालदीव के नए चीन समर्थक राष्ट्रपति भविष्य में भारत के साथ कैसे निभाएंगे ये हमारी चिंता का विषय होना चाहिए किन्तु हम पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव जीतने की जुगत में बहुत कुछ दांव पर लगा रहे हैं। ईश्वर यदि कहीं है तो हमें देश के लिए प्रार्थना करना चाहिए। अब देश प्रार्थनाओं से ही बच सकता है। देश की राजनीति में भरी कड़वाहट करेले से भी ज्यादा कड़वी हो गयी है । हो भी क्यों न करेला भी तो नीम पर चढ़ा हुआ है। हमें यद् रखना चाहिए कि मालदीव के भारत के साथ पहले से ही सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध रहे हैं। मालदीव लंबे समय से भारत के प्रभाव में रहा है। ये माना जाता है कि मालदीव में अपनी मौजूदगी बनाये रखकर भारत हिंद महासागर के बड़े हिस्से पर निगरानी रखता रहा ह। इसलिए हमें मालदीव की फ़िक्र करना चाहिए।

दागी लोकतंत्र के लिए हानिकारक हैं

जनता के जनप्रतिनिधियों की छवि सार्वजनिक जीवन में आम जनता के बीच स्वच्छ एवं आदर्शयुक्त होनी चाहिये। यह उनके व्यवहार एवं कृत्यों का दर्पण होता है। एक स्वस्थ्य लोकतंत्र के लिए यह आवश्यक भी है। लेकिन विगत कुछ वर्षों में हमारे माननीयों में दागदार लोगों की संख्या में होने वाली बढोत्तरी एक अच्छे लोकतंत्र के लिए खतरे की घण्टी हैं। विगत वर्षों में राजनीति एवं अपराधियों गठजोड़ काफी फल फूल रहा है एवं इसमें बढोत्तरी भी हो रही है।

2014 में 15वें प्रधानमंत्री के रूप में मोदी जी ने शपथ ली एवं जब संसद में पहली बार प्रवेश किया था तब माथा टेककर प्रवेश करते हुए कहा था। राजनीति में जो अपराधियों की घुसपैठ है उनको उनके उचित स्थान पर भेजा जायेगा।

चुनावी हलफनामों के आधार पर एसोसिएशन फार डेमोक्रेटिक रिफार्म अर्थात् ए. डी. आर. के विश्लेषण में संसद के 763 सांसदों में से 306 ने अपने खिलाफ आपराधिक मामले घोषित किये हैं जिसमें हत्या, हत्या का प्रयास, अपहरण, महिलाओं के खिलाफ अपराध शामिल है। इस रिपोर्ट में केरल 75 प्रतिशत के साथ शीर्ष पर है। इसी तरह विधानसभाओं में 44 प्रतिशत विधायकों के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज हैं। इसमें भी 28 प्रतिशत ने अपने खिलाफ गंभीर आपराधिक मामलों की घोषणा की थी। इसे विडम्बना ही कहा जायेगा एक व्यक्ति जो जेल मं बंद है और जिसे वोट देने का भी अधिकार नहीं है लेकिन चुनाव लड़ने के लिये मान्य हैं। इसके पीछे यह तर्क दिया जाता है कि, जब तक कोई दोषी सिद्ध न हो जाये तब तक उसे निर्दोष ही माना जाना चाहिये। बस इसी की आड़ में राजनीति में अपराधीकरण बढ़ रहा है एवं इसी के चलते लोकतंत्र में संसद एवं विधानसभाओं में इनका प्रवेश भी बढ़ता जा रहा है। इसके लिए सभी राजनीतिक पार्टियां जवाबदेह है जो इन्हें टिकट देकर लोकतंत्र के मंदिर में प्रवेश का रास्ता साफ करते हैं। यद्यपि ऐसे माननीयों की सुनवाई के लिए फास्ट टेऊक्र कोर्ट का गठन किया गया है जो सांसदों एवं विधायकों के विरूद्ध चल रहे प्रकरणों की सुनवाई करती है। विभिन्न उच्च न्यायालयों से आई रिपोर्ट के आधार पर नवंबर 2022 तक देश भर की अदालतों में वर्तमान एंव पूर्व सांसदों, विधायकों के खिलाफ कुल 5175 मामले लंबित है जिसमें से 2113 मामले पांच साल से ज्यादा पुराने हैं। एक सुझाव यह भी आया कि, सांसद एवं विधायकों के कोर्ट में लंबित मामलों की नियमित सुनवाई हो, संसाधनों की कोई कमी न हो, जजों के पद खाली न रहे, ताकि मुदकमों की सुनवाई तेजी से हो ताकि दागी नेताओं को चुनाव लड़ने से रोका जा सकें, ताकि दागी नेताओं की संख्या सीमित हो सकें।

एक रिपोर्ट में कहा गया है अयोग्यता समय सीमित (2 वर्ष या अधिक की सजा) करने से संविधान के अनुच्छेद 14 समानता का अधिकार का भी खुला उल्लंघन हैं। वकील अश्वनी उपाध्याय ने तो सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल कर दोषी ठहराये जाने पर चुनाव लड़ने पर आजीवन प्रतिबंध लगाने की मांग की है। जब शासकीय सेवा में ऐसा है तो विधायी संस्थानों में पद धारण के लिए क्यों नहीं? वास्तव में राजनीतिक पार्टियों एवं आपराधिक दाग से कलंकित नेताओं के मध्य एक गहरा गठजोड़ है। राजनीतिक पार्टियों का तो केवल एक ही मकसद होता है जिताऊ अभ्यार्थी, बस यही से सब घाल मेल शुरू होता है। चूंकि ऐसो की प्रकृति तो आपराधिक है जिसके चलते लोकतंत्र के मंदिर में इनके आचरण से लोकतंत्र एवं पार्टियों को समय-समय पर नीचे भी देखना पड़ता है। आजकल एक नया टेऊड भी चल निकला ये उनका व्यक्तिगत मत है। यह भी बुराईयों को ढकने का एक चलन है। दागी नेताओं को रोकने के लिए सरकार को चुनाव आयोग को न केवल शक्तिशाली बनाना चाहिये बल्कि विशेष शक्तियों से सम्पन्न भी बनाने का प्रयास करना चाहिये।

धार्मिक यात्रा, भजन गाने से नहीं होती लीडरशिप

एक कार्पोरेट लीडरशिप होती है-कैलाश विजयवर्गीय

इंदौर। भाजपा की दूसरी सूची जारी होने के साथ ही प्रदेश में राजनीतिक सरगर्मियां तेज हो गई हैं। इंदौर क्षेत्र क्र. 1 से भाजपा ने कैलाश विजयवर्गीय को अपना उम्मीदवार बनाकर इंदौर में कांग्रेस के एकमात्र विधायक संजय शुक्ला के सामने बड़ी चुनौती रख दी है। शुक्ला बनाम विजयवर्गीय होने से विधानसभा 1 पूरे प्रदेश में चर्चा का केंद्र होने के साथ ही हाईप्रोफाइल सीट बन चुकी है। ऐसे में कांग्रेस के मौजूदा विधायक संजय शुक्ला के सामने भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव और दिग्गज नेता कैलाश विजयवर्गीय को हराना आसान नहीं होगा। सीट हाईप्रोफाइल है। दो दिग्गज आमने-सामने है तो आरोप-प्रत्यारोप का दौर भी लाजिमी है।

बता दें कि आज हर विधानसभा में धार्मिक यात्रा, भोजन भंडारे, कथाएं लगातार हो रही हैं और सबसे अधिक कथाएं और धार्मिक आयोजन उनके ग्रह क्षेत्र विधानसभा दो में होते रहे हैं। विजयवर्गीय का यह बयान उस समय आया है, जब विजयवर्गीय शुक्ला के सामने भाजपा उम्मीदवार घोषित हो चुके हैं। इससे यह साफ होता है कि आने वाले दिनों में मुकाबला और कड़ा और रोचक होने की पूरी संभावना है। आरोप-प्रत्यारोप का दौर यूं ही चलता रहेगा, लेकिन विधायक शुक्ला को इन धार्मिक कार्यक्रमों से कितना फायदा होगा यह तो आने वाला समय ही बताएगा।

कथा स्थल के भूमिपूजन के बाद विजयवर्गीय के निशाने पर आए शुक्ला

विजयवर्गीय से लोहा लेने के लिए शुक्ला कमलनाथ की पिच पर खेलते हुए सॉफ्ट हिंदुत्व का रास्ता अपना चुके हैं। जनता को रिझाने के लिए शुक्ला कमलनाथ की ही तजर पर धार्मिक यात्राओं से लेकर कथा वाचन तक के आयोजन करा रहे हैं। हाल ही में विधायक शुक्ला ने 10 अक्टूबर से दलालबाग में आयोजित होने वाली प्रसिद्ध कथावाचक जया किशोरी के कथा स्थल का भूमिपूजन किया तो अपने प्रतिद्वंद्वी कैलाश विजयवर्गीय के निशाने पर आ गए। विजयवर्गीय ने हाल ही में कहा था कि लीडरशिप मंदिर जाने, धार्मिक यात्रा या भजन गाने से नहीं होती, कार्पोरेट लीडरशिप होती है। आप में डेवलपमेंट का विजन क्या है, आप इंदौर के डेवलपमेंट के विजन पर क्या काम कर सकते हैं वह लीडरशिप है।

कार्पोरेट विजन के साथ कार्य

कैलाश विजयवर्गीय ने उम्मीदवार बनाए जाने के बाद कहा था कि एक कार्पोरेट लीडरशिप होती है। आप में डेवलपमेंट का विजन क्या है, आप इंदौर के डेवलपमेंट के विजन पर क्या काम कर सकते हैं। हमने एक लाइन खींची विजन के साथ, आज उसी विजन पर सभी चल रहे हैं। चुनाव जीतने के लिए जनप्रतिनिधि का विजन क्या है, उसका गोल क्या है यह देखना होगा।

ट्रेंचिंग ग्राउंड पहुंचे डेलीगेट्स, जानी कचरे से गैस बनाने की प्रक्रिया

इंदौर। इंदौर स्मार्ट सिटी कॉन्क्लेव में शामिल होने आए डेलीगेट्स ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में एक्जीबिशन लगाने के बाद देवगुराड़िया स्थित ट्रेंचिंग ग्राउंड पहुंचे। यहां गीले कचरे से बायो सीएनजी उत्पादित की जाती है। डेलीगेट्स ने यहां कचरे से उत्पादित होने वाली गैस की प्रक्रिया समझी और स्वच्छता के मॉडल का अवलोकन किया।

ये पहुंचे थे देवगुराड़िया

देवगुराड़िया स्थित ट्रेंचिंग ग्राउंड में पहुंचने वाले डेलीगेट्स कानपुर, जबलपुर, लखनऊ, चंडीगढ़, अहमदाबाद, सूरत, सागर, वडोदरा, रायपुर, जम्मू, आगरा, कोहिमा, कोयंबटूर, रांची, उदयपुर, वाराणसी के थे। इस अवसर पर अधीक्षण यंत्री महेश शर्मा ने डेलीगेट्स को स्वच्छता मॉडल के साथ ही बायो सीएनजी प्लांट में किस प्रकार कचरा निपटान किया जा रहा है, के संबंध में जानकारी देते हुए कहा कि इसके माध्यम से सिटी बस के साथ अन्य वाहनों में सीएनजी का उपयोग किया जा रहा है।

पोर्टल के मार्फत भी बन सकेगा आयुष्मान कार्ड

इंदौर। भारत सरकार के मिनिस्ट्री ऑफ हेल्थ एंड फैमली वेलफेयर के पोर्टल लिंक https://bis.pmjay.gov.in/BIS/selfprintCard माध्यम से आयुष्मान कार्ड बना सकते है। इस लिंक पर जाकर सर्वप्रथम आधार का ऑप्शन चुनना है आधार का ऑप्शन चुनने के बाद उसमें स्कीम पर पीएमजेएवाई चयन कर राज्य का चयन करे मध्यप्रदेश चुनेंगे तदुपरांत अपना आधार नंबर डालेंगे। आधार नंबर डालने के बाद जिस मोबाइल नंबर से आधार लिंक है उस पर ओटीपी आएगा और उस ओटीपी को पोर्टल पर दर्ज कर देंगे।

इंदौर में सीएम के सामने मालिनी गौड़ का विरोध

विरोधी बोले 6 बार से एक ही परिवार को टिकट, अब परिवर्तन जरूरी

इंदौर। भारतीय जनता पार्टी की पहली सूची आने के बाद से ही इंदौर सहित प्रदेशभर में बगावत का दौर जारी है। लेकिन इंदौर में यह बगावत लगातार बढ़ती जा रही है। शनिवार को इंदौर एयरपोर्ट पर इंदौर-4 की विधायक मालिनी गौड़ के सामने ही सीएम शिवराज सिंह चौहान से इंदौर-4 के बीजेपी कार्यकर्ताओं ने वर्तमान विधायक को टिकट नहीं देने की बात कहीं। जिस पर सीएम ने भी कार्यकर्ताओं को यह कहते हुए आश्वासन दिया कि विचार किया जाएगा।

बीजेपी सूत्रों ने बताया कि इंदौर एयरपोर्ट पर जब सीएम पहुंचे और कार्यक्रम स्थल के रवाना हुए तब इंदौर-4 के कार्यकर्ताओं ने सीएम से मिलने की मांग की। लेकिन सीएम को कार्यक्रम में जाने में देरी हो रही थी इसलिए वह एयरपोर्ट से जाने लगे तभी विरोधियों में से किसी ने चिल्लाकर कहा कि सीएम साहब कार्यकर्ताओं की सुन नहीं रहे, धृतराष्ट्र बन गए। जिस पर सीएम बोले की कार्यकर्ताओं की सुनने तो आए हैं। तभी किसी अन्य कार्यकर्ता ने कहा कि क्या 8-10 कार्यकर्ता मरेंगे तब हमारी सुनी जाएगी। वहीं इस दौरान मालिनी गौड़ समर्थक जोर-जोर से जय श्री राम के नारे लगाने लगे। वर्तमान विधायक के कारण जीत का मार्जिन लगातार हो रहा कम-केन्द्रीय खनिज अन्वेषण निगम लिमिटेड बोर्ड की डायरेक्टर और पूर्व इंदौर महिला मोर्चा नगर अध्यक्ष ज्योति तोमर ने बताया कि विधानसभा 4 को बीजेपी की अयोध्या कहा जाता है। बीजेपी के कार्यकर्ताओं ने ही इंदौर-4 को अयोध्या बनाया है। आज इंदौर-4 के बीजेपी के कार्यकर्ता सीएम शिवराज सिंह चौहान से इंदौर एयरपोर्ट पर मिले और हमने उन्हें बताया कि 6 बार विधायक टिकट और 1 बार महापौर का टिकट गौड़ परिवार को मिल चुका है, तो अब अन्य बीजेपी कार्यकर्ता को मौका मिलना चाहिए। इसलिए अब टिकट में परिवर्तन होना चाहिए।

गांधी-शास्त्री जयंती पर निकाला शांति मार्च

इंदौर। गांधी जयंती और शास्त्री जयंती के अवसर पर श्री गुजराती समाज इंदौर के नेतृत्व में विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं के साथ मिलकर विशाल शांति मार्च निकाला गया। महारानी रोड से शुरू हुआ यह मार्च रीगल स्थित गांधी प्रतिमा तक गया, जहां पर समाज के विभिन्न पदाधिकारियों और संस्थाओं के प्राचार्यों ने माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके बाद शास्त्री प्रतिमा पर भी माल्यार्पण किया गया।

श्री गुजराती समाज इंदौर के अध्यक्ष प्रदीपभाई शाह, महामंत्री पंकजभाई संघवी, उपाध्यक्ष गोविन्दभाई पटेल, मानद कोषाध्यक्ष दीपकभाई मोदी व मानद हिसाबनीस श्री दीपकभाई जे. सोनी ने बताया कि श्री गुजराती समाज इंदौर द्वारा प्रतिवर्ष इस शांति मार्च और श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। रैली में श्री गुजराती समाज द्वारा संचालित नसिया रोड स्थित संस्थाएं पमब गुजराती विज्ञान महाविद्यालय, पमब गुजराती वाणिज्य महाविद्यालय, पमब गुजराती कला एवं विधि महाविद्यालय, गुजराती समाज बीएड कॉलेज, चमब गुजराती प्राथमिक विद्यालय व आरआरएमबी गुजराती उ.मा. विद्यालय, महारानी रोड कैम्पस स्थित एसकेआरपी गुजराती कन्या महाविद्यालय, केबी पटेल गुजराती कन्या उ.मा. विद्यालय एवं स्कीम नंबर 54 कैम्पस स्थित एसआरजीपी गुजराती प्रोफेशनल कॉलेज, जेएसएच गुजराती इनोवेटिव कॉलेज, एसकेआरपी गुजराती होम्योपैथिक कॉलेज, एनएमटी गुजराती कॉलेज ऑफ फामेसी व एएमएन गुजराती इंग्लिश मीडियम स्कूल में कार्यरत सैकड़ों की संख्या में शिक्षक और कर्मचारियों के साथ ही श्री गुजराती समाज के विभिन्न पदाधिकारियों व सदस्यों ने भाग लिया।

वृहद स्वच्छता और ई-वेस्ट कलेक्शन अभियान चलेगा

शांति मार्च में शामिल शिक्षकों और कर्मचारियों ने अनुशासन के साथ सड़क के एक किनारे चलते हुए ट्रैफिक को बाधित करने से भी रोका। साथ ही वो रास्ते में पड़े कचरे को एकत्रित करते हुए भी चल रहे थे। मार्च के समापन पर श्री गुजराती समाज के अध्यक्ष श्री प्रदीपभाई शाह ने अपने संबोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्रभाई मोदी के आव्हान पर शुरू हुए स्वच्छता पखवाड़े के अंतर्गत श्री गुजराती समाज की सभी शैक्षणिक संस्थाओं में वृहद स्वच्छता अभियान चलाने का निर्देश दिया। मानद महामंत्री श्री पंकजभाई संघवी ने कहा कि भारत सरकार के आव्हान पर सभी संस्थाओं में एनएसएस, एनसीसी और रेडक्रास के नेतृत्व में पूरा स्टॉफ ई-वेस्ट के संग्रहण का कार्य करेगा। उन्होंने शिक्षकों और कर्मचारियों से भी अपने घर का ई-वेस्ट सही तरीके से निष्पादन करने का आग्रह किया।

डेमेज कंट्रोल टीम संघ के साथ मिलकर मनाएगी रूठों को

कई विधानसभा क्षेत्रों में विधायकों के एकाधिकार के कारण कार्यकर्ता लंबे समय से उपेक्षित

भोपाल। मप्र में पहली बार ऐसा देखा जा रहा है कि बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता नाराज चल रहे हैं। वरिष्ठ पदाधिकारियों के मनाने के सारे प्रयास विफल रहे हैं। ऐसे में अब संघ रूठों को मनाने के अभियान में शामिल होगा। भाजपा के पदाधिकारियों का कहना है कि संगठन को उम्मीद है कि संघ की पहल कारगर सिद्ध होगी। पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के संभाग व जिलों के दौरों में पता चला है कि अपने एकाधिकार के कारण कई विधायक और मंत्रियों ने कार्यकर्ताओं की उपेक्षा की है। साथ में उन्हें न तो संगठन में एडजेस्ट होने दिया और न ही किसी समिति या अन्य उपक्रम में उपकृत किया। भाजपा के वरिष्ठ नेता डॉ. दीपक विजयवर्गीय का कहना है कि कार्यकर्ता एकजुट होकर चुनाव लड़ेंगे। इसी आधार पर हम 150 पार के लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। किन्हीं क्षेत्रों में कार्यकर्ताओं में मतभिन्नता की बात आएंगी तो वरिष्ठ नेताओं के जरिए मिल बैठकर मतैक्य स्थापित करेंगे और मिशन 2023 को जीतेंगे।

गौरतलब है कि भाजपा कार्यकर्ताओं की नाराजगी चुनावी साल में पार्टी को भारी पड़ सकती है। ऐसे में कार्यकर्ताओं को मनाने के लिए पार्टी सारे उपक्रम कर रही है। अब इसी कड़ी में कार्यकर्ताओं की नाराजगी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जरिए दूर की जाएगी। गौरतलब है कि भाजपा ने प्रदेश के 14 बड़े नेताओं को नाराज कार्यकर्ताओं को मनाने की जिम्मेदारी सौंपी थी, इन नेताओं ने कार्यकर्ताओं से संवाद तो किया लेकिन नाराजगी दूर कर पाने में कामयाब नहीं हुए। विधानसभा चुनाव नजदीक होने के कारण पार्टी चाहती हैं कि कार्यकर्ताओं की नाराजगी के कारण कहीं माहौल खराब न हो, इसका विशेष ख्याल रखा जाए।

कार्यकर्ता लंबे समय से उपेक्षित

पार्टी को मिले फीडबैक के मुताबिक कई विधानसभा क्षेत्रों में विधायक और मंत्रियों के एकाधिकार के कारण बहुत सारे कार्यकर्ता लंबे समय से उपेक्षित हैं। इसका असर चुनाव पर न पड़े, इसके लिए पार्टी अब संघ की मदद ले रही है। कार्यकर्ताओं को मनाने के लिए वरिष्ठ नेताओं की डेमेज कंट्रोल टीम बनाई गई है। जो संघ के स्थानीय नेताओं की मदद से कार्यकर्ताओं की नाराजगी दूर करेंगे। जानकारी के अनुसार पूरे कार्यकाल में विधायकों ने सिर्फ अपनों को ही उपकृत किया है। जिसके चलते कार्यकर्ता घर से बाहर नहीं निकल रहा है। अथवा चुनाव में सबक सिखाने के उद्देश्य से काम कर रहा है। पार्टी नेताओं का सोचना है कि ऐसा हुआ तो चुनाव में कई क्षेत्रों में नुकसान उठाना पड़ सकता है। बड़े नेताओं दौरों में कई कार्यकर्ताओं ने चेतावनी भरे अंदाज में अपना संदेश भी दिया है। ऐन चुनाव से पहले असंतोष के स्वर थामना पार्टी की चुनौती है।

अब तक के प्रयास असफल

पार्टी के कार्यकर्ता नाराजगी के कारण भाजपा छोडक़र कांग्रेस में न जाएं, इस बात का विशेष ख्याल रखे जाने के निर्देश पार्टी की जिला इकाइयों को दिए गए हैं। दरअसल, भाजपा के वरिष्ठ नेता और राष्ट्रीय सह संगठन महामंत्री शिवप्रकाश और क्षेत्रीय संगठन मंत्री अजय जामवाल के प्रदेश भ्रमण में यह निष्कर्ष सामने आया था कि निचले स्तर के कार्यकर्ता अपनी उपेक्षा के कारण नाराज हैं। यही वजह थी कि भाजपा ने प्रदेश के 14 बड़े नेताओं को पांच-पांच जिले सौंपकर सभी नाराज नेताओं के साथ संवाद भी करवाया था, लेकिन मामला संवाद तक ही रह गया। अब विधानसभा चुनाव सिर पर हैं और नाराज कार्यकर्ताओं की पीड़ा सुनने वाला कोई नहीं है। कार्यकर्ताओं की सुस्ती या निष्क्रियता की अन्य वजह यह है कि अंचल के बड़े नेताओं ने भी उनका भरोसा खो दिया है, जिसके चलते वे उनके सामने अपनी बात नहीं रखते हैं। पार्टी अब उन असंतुष्ट कार्यकर्ताओं पर नजर रख रही है जो चुनाव में दिक्कत दे सकते हैं। विधानसभावार ऐसे कार्यकर्ताओं की सूची तैयार कर रही है। ऐसे कार्यकर्ताओं के साथ पार्टी की डेमेज कंट्रोल टीम बात करेगी। इसके लिए स्थानीय स्तर पर संघ नेताओं की मदद ली जाएगी। संघ नेताओं की मदद से उन कार्यकर्ताओं बातचीत कर उन्हें मनाया जाएगा। पार्टी नेताओं का मानना है कि जनता भाजपा के साथ है इसलिए कार्यकर्ताओं को देर सबेर मना लिया जाएगा।

चौरसिया समाज का सम्मेलन में कमलनाथ बोले

शिवराज सिंह मुख्यमंत्री नहीं, भूमिपूजन मंत्री, सच्चाई का साथ दीजिए

भोपाल। भेल दशहरा मैदान पर आयोजित चौरासिया समाज के सम्मेलन में पहुंचे पीसीसी चीफ कमलनाथ ने कहा, शिवराज सिंह मुख्यमंत्री नहीं, भूमिपूजन मंत्री हैं। वे एक तरह के घोषणा मंत्री हैं, इनकी घोषणाएं डबल स्पीड से चल रहीं हैं। इनके पास और कोई उपाय बचा नहीं हैं की जनता को कैसे मूर्ख बनाया जाए। आप लोग न कमलनाथ का साथ देना और न ही कांग्रेस का। प्रदेश की तस्वीर रख लीजिए और सच्चाई का साथ दीजिए। सच्चाई का साथ देंगे तो भविष्य सुरक्षित रहेगा। कमलनाथ ने कहा, हमारी सरकार 15 महीने चली, इस दौरान हमने अपनी नीति और नियति की परिचय दिया। किसानों का कर्ज माफ किया, गोशाला बनाई, कौन सा पाप किया। मैंने सौदा कभी नहीं किया। हमने पहली किस्त में 27 लाख किसानों का कर्जा माफ किया। जनता को बिजली में राहत दी। भविष्य आपके हाथ में है। आपका समाज जो सरल और समझदार है, वह प्रदेश में सच्चाई का साथ देगा। यह दो महीने बाद होने वाला चुनाव मध्य प्रदेश के भविष्य का है। आपको हर समाज में जागरुकता लानी है, मध्य प्रदेश को फिर से एक नए रास्ते पर ले जाएंगे।

रेप की घटनाएं उजागर नहीं हो रहीं

सम्मेलन को संबोधित करने के बाद मीडिया से शिवराज सिंह चौहान द्वारा राहुल गांधी पर दिए गए बयान पर कमलनाथ ने कहा, शिवराज जी के कहने से क्या होता है। लोग सच्चाई समझ रहे हैं। उज्जैन रेप केस पर कहा- पूरे प्रदेश में इस तरह की घटनाएं हो रही हैं। उजागर बहुत कम घटनाएं होती हैं।

पान बोर्ड निगम की मांग

अखिल भारतीय चौरसिया महासभा दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष गौरव चौरसिया ने कहा, मैं मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान से आग्रह करना चाहता हूं। समाज उनकी राह देख रहा है, वह भी इस कार्यक्रम में आएं और संबोधित करें। हमारे समाज के लोग लंबे समय से सभी राजनीतिक दलों के साथ हैं। प्रदेश के चुनाव में चौरसिया समाज की दोनों दलों के द्वारा उपेक्षा की जा रही है। हर समाज के लिए सरकार ने बोर्ड निगम मंडल बनाए हैं। चौरसिया समाज पान विकास निगम बनाने मांग कर रहा है। पान विकास सलाहकार बोर्ड का गठन हो गया है यह हम पांच वर्षों से सुन रहे हैं। आज तक किसी भी समाज के व्यक्ति की इसमें नियुक्ति नहीं हुई है। क्योंकि आज पान की खेती प्रदेश भर से लुप्त हो गई है। उन्होंने कहा, सरकार ने जिस तरह से दूसरे समाज को धार्मिक स्थल बनाने जमीन दी है। उसी तरह हमारे समाज को भी हमारे आदि पूर्वज, कुलगुरू चौरसी महाराज का एक चौरसी धाम बनाने के लिए भी कमलनाथ जी और शिवराज जी से आग्रह किया है।

नहीं तो उतारेंगे निर्दलीय प्रत्याशी

उन्होंने कहा कि हमने दोनों दलों से हमारे समाज के लोगों को टिकट देने की मांग की है। शिवराज जी से भी दोबारा मिलने का प्रयास करेंगे। हमें विश्वास है कि हमारी मांगे मानी जाएगी, अगर उपेक्षा हुई तो अपने निर्दलीय प्रत्याशी उतारेंगे और अपने समाज के लोगों को विधानसभा तक पहुंचाने का काम करेंगे।

कमलनाथ को उनके गढ़ छिंदवाड़ा में घेरने की तैयारी

चौरई से विधानसभा चुनाव लड़ेंगी उमा भारती!

भोपाल। प्रदेश में कांग्रेस काबिज 76 विधानसभा सीटों पर तीन केन्द्रीय मंत्री और सात सांसदों सहित तमाम दिग्गजों को चुनावी मैदान में उतारने के बाद भाजपा हाईकमान अब पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ को उनके गढ़ छिंदवाड़ा में घेरने की नई रणनीति पर काम कर रहा है। इसमें भाजपा अपनी फायर ब्रांड नेता एवं पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती को चौरई विधानसभा सीट से चुनाव लड़ाने पर विचार कर रही है। इसके पहले भाजपा चौरई से केंद्रीय मंत्री प्रहलाद सिंह पटेल को चुनाव लड़ाने का लगभग मन बना चुकी थी। लेकिन ऐन वक्त पर बदली रणनीति के तहत प्रहलाद पटेल को नरसिंहपुर विधानसभा सीट पर उतार दिया गया। अभी इस विधानसभा सीट पर कांग्रेस का कब्जा है और कमलनाथ के करीबियों में शुमार सुजीत मेर सिंह विधायक हैं। हम बता दें कि, कमलनाथ के गढ़ छिंदवाड़ा में भाजपा ने पहले और दूसरे चरण में 6 सीटों पर अपने प्रत्याशी घोषित कर दिए है, लेकिन एकमात्र चौरई विधानसभा को लेकर पार्टी ने प्रत्याशी के नाम को होल्ड पर रखकर सभी की बेचैनी बढ़ा रखी है। चौरई से पहले भाजपा से पूर्व विधायक पंडित रमेश दुबे और चौधरी चंद्रभान सिंह का नाम चल रहा था। भाजपा की नई रणनीति के तहत अब यहां से उमा भारती को चुनाव लड़ाने की चर्चाएं हैं। उमा को चौरई से चुनाव लड़ाने के पीछे पार्टी खास मंशा कमलनाथ का तिलस्म तोड़ने और उनके गढ़ छिंदवाड़ा में कमलनाथ को घेरने की है।

इसलिए भी उमा को चौरई से उतार सकती भाजपा-हम बता दें चौरई रघुवंशी समाज बाहुल्य क्षेत्र है। इसके अलावा चौरई में लोधी समाज का भी एक बड़ा वोट बैंक है। इसके साथ चौरई में उमा भारती की अच्छी पकड़ है। बतौर लोधी नेता उमा भारती को पार्टी चौरई विधानसभा सीट से चुनाव मैदान में उतार सकती है। भाजपा रूठी हुई उमा भारती को मनाने और कमलनाथ को गर्नें की दोहरी रणनीति पर विचार कर रही है.

तीसरा मोर्चा बिगाड़ेगा कांग्रेस-भाजपा का गणित

विंध्य, बुंदेलखंड और ग्वालियर-चंबल में बसपा, सपा और आप की जोरदार तैयारी

भोपाल। *मप्र में वैसे तो भाजपा और कांग्रेस के बीच ही चुनावी मुकाबला होता रहा है, लेकिन थर्ड फ्रंट यानी तीसरे मोर्चे के दल दोनों पार्टियों का चुनावी गणित बिगाड़ते रहते हैं। मिशन 2023 के लिए इस बार बसपा, सपा और आप बड़े-बड़े दावे का साथ चुनावी तैयारी में जुटे हुए हैं। खासकर विंध्य, बुंदेलखंड और ग्वालियर-चंबल अंचल में बसपा, सपा और आप की जोरदार धमक सुनाई और दिखाई दे रही है। जानकारों का कहना है कि इन तीनों क्षेत्र की 90 सीटों पर थर्ड फ्रंट भाजपा-कांग्रेस का गणित बिगाड़ेगा।*

मप्र विधानसभा चुनाव के दिन नजदीक आते ही प्रदेश का चुनावी पारा बढ़ता जा रहा है। प्रदेश में भाजपा, कांग्रेस के चुनावी मोर्चा खोलने के साथ ही अब सपा, बसपा और आप ने भी सक्रियता बढ़ा दी है। हमेशा की तरह इस बार भी भाजपा और कांग्रेस के बीच सीधा मुकाबला होगा। लेकिन एक मजबूत क्षेत्रीय राजनीतिक संगठन के अभाव में कुछ अन्य दल अपने क्षेत्रों का विस्तार करने का प्रयास करेंगे। पिछले साल कोयला नगरी सिंगरौली में मेयर पद जीतकर शानदार एंट्री करने वाली दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की आम आदमी पार्टी इस साल पहली बार मप्र में विधानसभा चुनाव लड़ेगी। वहीं सपा और

बसपा अपना अब तक का बेहतर प्रदर्शन करने की तैयारी में हैं।

90 सीटों पर दमदारी-वैसे तो प्रदेश में सपा और बसपा का प्रभाव विंध्य, बुंदेलखंड और ग्वालियर-चंबल अंचल की कई सीटों पर दिखता है। अब इस सूची में आप का नाम भी शामिल हो गया है। बसपा-सपा की नजर जातिगत वोट बैंक पर है तो आप को एंटी-इनकम्बेंसी और अरविंद केजरीवाल की दस गारंटी योजनाओं की घोषणाओं पर है। तीनों पार्टियों को विंध्य बुंदेलखंड और ग्वालियर-चंबल की 90 सीटों से उम्मीद है। सपा और बसपा इन तीनों इलाकों में कांग्रेस-भाजपा का चुनावी गणित बिगाड़ती रही हैं। दोनों पार्टियों के उम्मीदवार यहां जीतने के साथ ही भाजपा-कांग्रेस के चुनावी परिणाम को प्रभावित करते रहे हैं। बसपा 16 सीटों पर उम्मीदवार घोषित कर चुकी है। आप ने दस और सपा ने 7 उम्मीदवारों की सूची जारी की है। ज्यादातर उम्मीदवार इन्हीं तीन क्षेत्रों से हैं। बसपा ने 2018 में 227 सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे 202 पर जमानत जब्त हो गई थी। सपा के 52 में से 45 की जमानत जब्त हुई थी। बसपा ने 2013 में 227 सीटों में से 4 जीतीं। 194 में जमानत जब्त हुई। 6।29 प्रतिशत वोटशेयर रहा। सपा की 164 में से 161 पर जमानत जब्त हो गई थी। चार सीटों पर दूसरे नंबर पर रही। सपा-बसपा अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन दोहराने की कोशिश में हैं।

सपा ने सबसे ज्यादा सात सीटें 2003 में जीती थीं। बसपा की झोली में 1998 में 11 सीटें गई थीं। इसके बाद दोनों की सीटें कम होती गई। पिछले चुनाव में बसपा ने 2 और सपा ने 1 सीट जीती थीं। 2013 में सपा को शून्य और बसपा को चार सीटें मिलीं। हालांकि कहीं न कहीं दोनों पार्टियों का उत्तरप्रदेश की सत्ता में होने का असर मध्यप्रदेश में असर वोट प्रतिशत बढ़ने के रूप में दिखा है।

थर्ड फ्रंट के लिए संभावना

विंध्य, बुंदेलखंड और ग्वालियर-चंबल अंचल में बसपा, सपा और आप की जोरदार तैयारी इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि यहां थर्ड फ्रंट की संभावना हमेशा बनी रहती है। वर्तमान में ग्वालियर-चंबल के 8 जिलों में 34 सीट हैं। 26 सीट कांग्रेस, भाजपा को 7 और बसपा के पास एक सीट है। विंध्य के सात जिलों की 30 सीट हैं। 2018 में 30 में से 24 सीटें भाजपा को मिली थीं। 2013 में बसपा दो सीट जीती थी। पिछले छह चुनावों में जिन 24 सीटों पर बसपा जीती है, उसमें 10 विंध्य क्षेत्र की हैं। बुंदेलखंड के सात जिलों में 26 में से 17 पर भाजपा और सात सीटों पर कांग्रेस है। सपा-बसपा के खाते में भी एक-एक सीट आई थी। सपा विधायक ने भाजपा का दामन थाम लिया था।

जीत के अपने-अपने दावे

मिशन 2023 में भाजपा-कांग्रेस में भले ही मुकाबला होना है, लेकिन सपा, बसपा और आप भी अधिक से अधिक सीटें जीतने का दावा कर रहे हैं। बहुजन समाज पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष रमाकांत पिप्पल का कहना है कि पार्टी सामान्य सीटों पर भी फोकस कर रही है। बघेलखंड में भी हम तीन से चार सीट जीतेंगे। पार्टी जमीनी कार्यकर्ताओं को टिकट दे रही है तो जनता के वोट भी मिलेंगे। इस बार प्रदेश की 100 सीटों पर फोकस है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव की रीवा और छतरपुर में सभा हो चुकी हैं। प्रदेश अध्यक्ष रामायण सिंह पटेल का कहना है कि पार्टी 130 सीटों पर मजबूत स्थिति में है बुंदेलखंड, विंध्य, ग्वालियर- चंबल के साथ ही बघेलखंड की सीटों पर जीत मिलेगी। वहीं आप को ग्वालियर-चंबल, विंध्य, बुंदेलखंड के साथ ही निमाड़-मालवा में भी ज्यादा सीटें जीतने की उम्मीद है। पार्टी ने निमाड़-मालवा में तेजी से संगठन तैयार किया है। आप केजरीवाल की दस गारंटी पर चुनाव में ताल ठोक रही है। उनकी विंध्य में दो सभाएं हो चुकी हैं।

भाजपा के दिग्गजों ने बढ़ाई कांग्रेस की टेंशन

अब चुनाव की तारीखों के एलान के बाद आएगी सूची

भोपाल। मध्य प्रदेश भाजपा ने केंद्रीय मंत्री समेत सात सांसदों को चुनाव मैदान में उतारकर कांग्रेस की टेंशन बढ़ा दी है। इसके चलते अब कांग्रेस ने अपनी पूरी रणनीति बदल दी है। कांग्रेस की प्रत्याशियों की सूची अब चुनाव की तारीखों के एलान के बाद नवरात्रि में आने की संभावना है। भाजपा की तीन सूची में 79 नाम आने के बाद कांग्रेस भी अपने प्रत्याशियों की सूची जारी करने की तैयारी में जुट गई है। इसको लेकर तीन अक्टूबर को दिल्ली में स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक बुलाई गई है। इसमें प्रत्याशियों का चयन कर केंद्रीय चुनाव समिति को भेजा जाएगा। भाजपा के केंद्रीय मंत्रियों समेत सात सांसदों को उतारने के बाद कांग्रेस ने अपनी रणनीति बदल दी है। पार्टी सूत्रों के अनुसार अब भाजपा के दिग्गजों को घेरने की योजना पर काम कर रही है। इसके लिए पार्टी ने अपनी रणनीति में बदलाव करने जा रही है। यही वजह है कि अब प्रत्याशियों की पहली सूची भी पार्टी नवरात्रि में 15 अक्टूबर के बाद जारी करने पर विचार कर रही है। ऐसे में पांच अक्टूबर को जन आक्रोश यात्रा के समाप्त होने के बाद सूची जारी होने की संभावना कम हो गई है। पहली सूची में 100 से अधिक प्रत्याशियों

के नाम की घोषणा हो सकती है। इसमें 50 प्रतिशत से अधिक वर्तमान विधायक शामिल हो सकते हैं। कांग्रेस के वर्तमान में 95 विधायक हैं।

15 से 20 विधायकों के टिकट कटना तय-विधानसभा चुनाव के लिए कांग्रेस ने भी कई सर्वे कराए हैं। केंद्रीय नेतृत्व के साथ ही पूर्व सीएम कमलनाथ ने भी अपने सर्वे कराए हैं। कमलनाथ और दिग्विजय सिंह दोनों ने हारी सीटों पर लगातार दौरे किए। उन्होंने हारी सीटों पर अपने जिताऊ उम्मीदवार को लेकर स्थानीय कार्यकर्ताओं से फीडबैक लिया। जिसके आधार पर अपनी रिपोर्ट बनाकर कमेटी के सामने रखी गई है। पार्टी का उम्मीदवार चयन का फॉर्मूला सिर्फ जिताऊ उम्मीदवार रखा गया है। इस बार मौजूदा विधायकों में 15 से 20 विधायकों के टिकट कट सकते हैं।

कांग्रेस का यूथ पर फोकस-कांग्रेस अपनी लिस्ट में युवाओं पर फोकस कर रही है। इस बार चुनाव में कांग्रेस युवाओं को टिकट देगी। साथ ही ज्यादा से ज्यादा जिताऊ महिला उम्मीदवारों को भी मौका दिया जाएगा।

दिग्गज नेताओं का चुनाव लड़ने से इंकार-चुनाव मैदान में उतरे भाजपा के दिग्गजों को चुनौती देने के लिए कांग्रेस भी रणनीति बना रही है, लेकिन कांग्रेस की तरफ से बड़े नेता चुनाव मैदान में उतरने से कतरा रहे हैं। पीसीसी चीफ और पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ अभी तक तय नहीं कर पाए हैं कि वह छिंदवाड़ा से विधानसभा चुनाव लड़ेंगे या नहीं। हालांकि चर्चा है कि वे चुनाव नहीं लड़ रहे। पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह भी विधानसभा चुनाव के दंगल में उतरने को तैयार नहीं है। उन्होंने 2003 के बाद से कोई विधानसभा का चुनाव नहीं लड़ा। वहीं, पूर्व केंद्रीय मंत्री कांतिलाल भूरिया भी अपने बेटे विक्रांत भूरिया को चुनाव में उतारना चाहते हैं। इसलिए वे भी चुनाव नहीं लड़ना चाहते।

बता दें पूर्व केंद्रीय मंत्री कांतिलाल भूरिया ने 2019 में झाबुआ से उपचुनाव जीता था।

बीमा राशि नहीं दी, अब हर्जाना समेत देने होंगे 21.25 लाख

जिला उपभोक्ता आयोग ने पीड़ित के पक्ष में सुनाया फैसला

भोपाल। बीमा कंपनी द्वारा सेवा शर्तों के उल्लंघन का मामला सामने आया है। जिला उपभोक्ता आयोग ने मामले में सुनवाई करते हुए पीड़ित पक्ष के हक में फैसला सुनाया है। आयोग ने बीमा कंपनी के तर्क को खारिज करते हुए दो महीने में 21 लाख रुपये बीमा राशि समेत मानसिक क्षतिपूर्ति राशि 25 हजार रुपये बतौर हर्जाना देने का आदेश दिया है। दरअसल, शिक्षक भूषणचंद जैन ने 2018 में मकान के लिए पंजाब नेशनल बैंक से लोन लिया था। उन्होंने लोन लेने के पहले जीवन बीमा कराया था। यह बीमा पीएनबी मेटलाइफ इंडियन इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड द्वारा किया गया। इसके लिए उनसे एक लाख 34 हजार रुपये प्रीमियम के तौर पर लिए गए। वर्ष 2021 में दिल का दौरा पड़ने से भूषण चंद्र की मृत्यु हो गई। उनके बेटे आकाश जैन ने बीमा की राशि ..के लिए आवेदन किया। बीमा कंपनी ने यह तर्क रखा कि उपभोक्ता को पहले से उच्च रक्तचाप और लिवर की बीमारी थी।

उपभोक्ता ने बीमारी होने की बात. को छुपाया था। अधिवक्ता आशीष चौधरी ने बताया कि बीमा कंपनी द्वारा किसी तरह का कोई ठोस साक्ष्य जैसे कोई पर्चे प्रस्तुत नहीं किए गए। इस कारण न्यायालय ने बीमा कंपनी का तर्क स्वीकार नहीं किया। कंपनी को बीमा की राशि दो माह के अंदर देनी होगी।

2023 में बायकॉट ट्रेंड के बावजूद इन फिल्मों ने कमाए करोड़ों रुपये

बॉलीवुड में काफी समय से फिल्में चल नहीं रही थीं। कई बायकॉट ट्रेंड के चलते फिल्मों पर असर पड़ता था और फिल्म बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप हो जाती थी। साल 2023 में रिलीज हुईं फिल्में बॉलीवुड में रौनक लेकर आई हैं। बॉलीवुड में कई ऐसी फिल्में रिलीज हुईं जिन्होंने बॉक्स ऑफिस पर जमकर कमाई की है। पठान, द केरल स्टोरी, गदर 2 सहित कई फिल्मों ने 2023 में बॉक्स ऑफिस पर करीब 2700 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया है। आइए जानते हैं कि 2023 की उन फिल्मों के बारे में जिन्होंने ज्यादा कमाई की है।

तू झूठी मैं मक्कार

रणबीर कपूर और श्रद्धा कपूर की साथ में पहली फिल्म तू झूठी मैं मक्कार मार्च में रिलीज हुई थी। दोनों स्टार्स की साथ में पहली फिल्म तू झूठी मैं मक्कार ने बॉक्स ऑफिस 149.05 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया था।

किसी का भाई किसी की जान

सलमान खान की फिल्म किसी का भाई किसी की जान ईद पर सिनेमाघरों में आई। फिल्म ने भले ही बहुत ज्यादा कमाई नहीं की लेकिन 100 करोड़ रुपये का आंकड़ा पार किया। सलमान खान की फिल्म 110.53 करोड़ रुपये कमाए थे।

गदर 2

सनी देओल और अमीषा पटेल की फिल्म गदर 2 ने बॉक्स ऑफिस पर तहलका मचा दिया था। सनी देओल और अमीषा पटेल की फिल्म गदर 2 ने 525 करोड़ रुपये की कमाई की थी।

ड्रीम गर्ल 2

आयुष्मान खुराना और अनन्या पांडे की फिल्म ड्रीम गर्ल 2 ने लोगों को जमकर एंटरटेन किया। अगस्त में रिलीज हुई फिल्म ड्रीम गर्ल 2 ने बॉक्स ऑफिस पर 104.65 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया था।

जवान

शाहरुख खान की फिल्म जवान 7 सितंबर को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी और अभी लगी है। शाहरुख खान की फिल्म ने अब तक 584.32 करोड़ रुपये की कमाई कर ली है।

द केरल स्टोरी

अदा शर्मा की फिल्म द केरल स्टोरी मई में रिलीज हुई थी और इस फिल्म को लेकर काफी विवाद हुआ था। हालांकि, फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर 242.20 करोड़ रुपये की कमाई की थी।

एनिमल के लिए रणबीर ने ली आधी फीस

बॉलीवुड एक्टर रणबीर कपूर साल में कम फिल्में करने के लिए जाने जाते हैं। लेकिन वे जब भी किसी फिल्म में काम करते हैं तो धमाका जरूर होता है। रणबीर का अभिनय और अंदाज कुछ ऐसा है कि फैंस को बेसब्री उनकी फिल्मों के रिलीज का इंतजार रहता है। हाल ही में रणबीर कपूर की फिल्म एनिमल का टीजर रिलीज हुआ। टीजर को फैंस से काफी अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है। वैसे तो रणबीर कपूर एक फिल्म के लिए काफी तगड़ी फीस लेते हैं लेकिन रिपोर्ट्स की मानें तो इस फिल्म के लिए उन्होंने ज्यादा पैसे नहीं लिए हैं।रणबीर कपूर की बात करें तो एक्टर की अच्छी-खासी मार्केट वेल्यू है और उनकी फिल्में भी अच्छी कमाई करती हैं। बता दें कि एक फिल्म के लिए रणबीर कपूर करीब 70 करोड़ रुपये चार्ज करते हैं। इस फिल्म के लिए भी उनकी फीस लगभग इतनी ही थी

लेकिन उन्होंने अपनी पूरी फीस लेने से इंकार कर दिया है। उन्होंने ऐसा किस वजह से किया है वो भी सामने आ गया है।दरअसल इस फिल्म को कम्प्लीट करने में प्रोड्यूसर्स और डायरेक्टर्स को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा. फिल्म को उम्मीद के मुताबिक शूट करने के लिए और उसके पोस्ट प्रोडक्शन को पूरा करने के लिए अच्छे-खासे पैसे लग गए।बड़े फिल्मी परिवार से होने की वजह से इस बात को खुद रणबीर ने समझा और उन्होंने अपनी फीस आधी माफ कर दी। रणबीर कपूर के इस फैसले की हर तरफ तारीफ की जा रही है।

संयुक्त परिवारों की धरोहर हैं बुजुर्ग

हमारे भारत देश में सयुंक्त परिवारों का चलन बहुत लम्बे समय तक रहा आज भी इक्का दुक्का सयुंक्त परिवार हमारे देश मे मिल जायेंगे इन संयुक्त परिवारों में बड़े- बुजुर्ग सर्वदा परिवार के मुखिया के तौर पर एक सम्मानीय व्यक्तित्व रहे हैं।

-लोगों के घरों में परिवार के प्रत्येक सदस्य को एक सूत्र मे पिरोये रखने का काम उन्ही के द्वारा किया जाता है ही साथ ही घर के प्रत्येक सदस्य

को हमेशा यह अनुभव होता रहता है कि अरे थोड़ा सावधान दादा या दादी बैठी हैं घर परिवार के मान मर्यादाओं की रक्षा सदैव इन्ही बुजुर्गों ने किया है।

इंटरनेट से जानकारी मिल सकती है पर ज्ञान नहीं

जी हां आज के इस भाग-दौड़ वाली अत्याधुनिक समय मे हम अपने फोन के इंटरनेट से प्रत्येक तरह की जानकारियां कुछ ही पल मे हासिल कर लेते है, लेकिन अच्छे संस्कार, विचार एवं व्यवहार करने की सीख हमे हमारे परिवार के इन बुजुर्ग सदस्यों से ही आज तक प्राप्त होता आया हैं, इसके अतिरिक्त हमारे घर के बच्चों को अनेको तरह की नैतिकता पूर्ण शिक्षाप्रद कहानियां सुना कर उनके बौद्धिक विकास के साथ ही साथ चरित्र निर्माण करने जैसा काम भी वे करते रहे हैं। परिवार में रिश्तों की अहमियत से लेकर अनुभवों का खजाना समेटे स्नेह का भंडार इन बड़े-बुजुर्गों का धरोहर होता है। अपनी कंपकपती लड़खड़ाती अंगुलियों से घर के नन्हे मुन्नों से लेकर युवा लोगों तक को अपने आशीर्वाद के ऊर्जा से परिपूर्ण करते रहते है। ऐसे संस्कारों एवं आचरणों का भंडार हमारे घर के बड़े-बुजुर्गो के पास ही होते हैं।

बुजुर्ग और समाज

आज हमारे बुजुर्गों को समाज में अहमितय न दिये जाने के कारण हमारा वृद्ध समाज दु:खी, उपेक्षित एवं त्रासदी पूर्ण जीवन जीने को मजबूर है किसी भी राष्ट्र के लिये जितना महत्वपूर्ण उसके युवा वर्ग के लोग हैं उतने ही महत्वपूर्ण देश के बुजुर्ग भी है जो अपने ज्ञान और अनुभवों से देश के भभिष्य कहलाने वाले युवा पीढ़ीयों का मार्ग दर्शन कर सकें। ●

क्यों मनाया जाता है अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस

वैसे तो वरिष्ठजनों का सम्मान हर दिन, हर पल हमारे मन में होना चाहिए, लेकिन उनके प्रति मन में छिपे इस सम्मान को व्यक्त करने के लिए और बुजुर्गों के प्रति चिंतन की आवश्यकता के लिए औपचारिक तौर पर भी एक दिन निश्चित किया गया है, इसलिए प्रतिवर्ष 1 अक्टूबर का दिन अंतर्राष्ट्रीय बुजुर्ग दिवस या अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के रूप में मनाया जाता है। विश्व में वृद्धों व प्रौढ़ों के साथ होने वाले अन्याय, उपेक्षा और दुर्व्यवहार पर लगाम लगाने के उद्देश्य से इस दिन को चिंहित किया गया है। बचपन से ही हमें घर में शिक्षा दी जाती है कि हमें अपने से बड़ों का सम्मान करना चाहिए। वरिष्ठजन हमारे घर की नींव होते हैं। बुजुर्गों का आशीर्वाद बहुत भाग्य वालों को मिलता है, इसलिए सभी को अपने से बड़ों और वरिष्ठजनों का सम्मान करना चाहिए। आइये जानते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस क्यों मनाया जाता है और कब इसकी शुरुआत की गई थी।

वृद्धजन दिवस का इतिहास

हर साल की तरह इस साल भी 1 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस मनाया जा रहा है। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 14 अक्टूबर 1990 में वृद्धजनों के लिए अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस घोषित किए जाने की बात रखी थी, जिसके बाद से 1 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। इससे पहले दो महत्वपूर्ण घटनाक्रम थे - वियना अंतर्राष्ट्रीय कार्य योजना और एजिंग पर विश्व सभा। दो पहलों ने बुजुर्ग लोगों के लिए समर्पित दिन का नेतृत्व किया। इस वृद्ध दिवस के दिन न सिर्फ बुजुर्गों के प्रति उदार होने का संकल्प लेना चाहिए, बल्कि बुजुर्गों की देखभाल की जिम्मेदारी भी समझनी चाहिए।

अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस 2023 की थीम

अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस 2023 के स्मरणोत्सव का विषय 'बदलती दुनिया में वृद्धजनों का लचीलापन' है। डिजिटलीकरण ने हमारे जीवन स्तर में क्रांति ला दी है। वृद्ध व्यक्ति इन आधुनिक डिजिटल तकनीकों के उपयोग में बहुत पीछे हैं। जो इन प्रौद्योगिकियों के पूरी तरह से लाभार्थी नहीं हैं।

देश में लगातार बढ़ते जा रहे हैं वृद्धाश्रम

पहले वृद्धाश्रमों को हमारे समाज में बड़े ही नकारात्मक रूप में देखा जाता था और लोग यह मानते थे कि इनके खुलने से पुत्र-पुत्रियां अपनी ज़िम्मेदारियों से और ज्यादा भागेंगे परंतु तब के समय में वृद्धों के साथ ऐसी संवेदनहीनता की स्थिति नहीं थी। शहरी मध्यवर्ग की लालसाओं का विकराल रूप भूमंडलीकरण के बाद अधिक मुखर हुआ है। जब समस्याएं बढ़ीं तो धीरे-धीरे वृद्धाश्रमों की स्वीकार्यता भी बढ़ी।

क्यों बढ़ रही बुजुर्गों की संख्या ?

इस रिपोर्ट के मुताबिक केवल भारत में ही बुढ़ापे की समस्या नहीं है, बल्कि दुनियाभर की आबादी बूढ़ी हो रही है। वैश्विक स्तर पर साल 2022 में दुनिया की कुल आबादी (7.9 अरब) में से 1.1 अरब लोग 60 वर्ष से अधिक की आयु के थे। यह कुल आबादी का 13.9 फीसदी हिस्सा है। वहीं साल 2050 तक वैश्विक स्तर पर बुजुर्गों की संख्या बढ़कर करीब 2.2 अरब यानी लगभग 22 फीसदी तक पहुंच जाएगी। भारत में बुजुर्गों की बढ़ती संख्या के मुख्य तीन कारण बताए जा रहे हैं। इनमें घटती प्रजनन क्षमता, मृत्यु दर में कमी और उत्तरजीविता में वृद्धि शामिल है। आपको बता दें कि यूएन ने हाल ही में आंकड़े जारी करते हुए कहा कि भारत दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले देश के रूप में चीन से आगे निकल गया है। ब्लूमबर्ग ने संयुक्त राष्ट्र के विश्व जनसंख्या डैशबोर्ड के हवाले से बताया कि भारत की जनसंख्या 1.428 अरब (142.86 करोड़) से अधिक है। जबकि, चीन की आबादी 1.425 अरब (142.57 करोड़) है। ●

इन आसान तरीकों से करें बुजुर्गों की जिद का समाधान

बुढ़ापा किसी बचपने से कम नहीं होता है। बढ़ती उम्र के साथ बेशक लोग जिंदगी के कई अनुभव बटोर कर संजिदा हो जाते हैं, लेकिन बुढ़ापा आते-आते यही सीरियसनेस गुस्सा, लाड, फटकार और जिद में तब्दील हो जाती है। ऐसे में बच्चे भी पैरेंट्स की बात मानने के बजाए, उनसे दूरी बनाना शुरू कर देते हैं। हालांकि, बुजुर्गों की बातों को अनदेखा करने की जगह आप उन्हें हैंडल करने के कुछ आसान तरीके भी अपना सकते हैं। बच्चे काम की व्यस्तता के चलते बुजुर्गों को ठीक से समय नहीं दे पाते हैं। ऐसे में अकेलेपन के कारण बुजुर्ग अवसाद, तनाव, व्याकुलता जैसी परिस्थितियों का शिकार होने लगते हैं और चिड़चिड़ापन, रूठना, जिद करना उनके व्यवहार का हिस्सा बन जाता है। ऐसे में कुछ अहम बातों का खास ख्याल रखकर आप उनकी खुशी की वजह बन सकते हैं।

बातों को न करें नजरंदाज : कई बार व्यस्त दिनचर्या के कारण हम घर के बुजुर्गों के साथ बैठने से कतराने लगते हैं। हालांकि, उन्हें आपके समय की सबसे ज्यादा आवश्यकता होती है। इसलिए दिन में थोड़ा समय निकाल कर उनके साथ बैठकर बातें करना ना भूलें। साथ ही उनकी बातों को अनदेखा करने के बजाए ध्यान से सुनें। इससे उन्हें काफी खुशी मिलेगी और वो बिल्कुल अकेला फील नहीं करेंगे। ●

इंदौर में मेट्रो ट्रेन का श्री गणेश

इंदौर मेट्रो का ट्रायल रन, 15-20 की स्पीड में चली ट्रेन

सीएम बोले- अगले सिंहस्थ में मेट्रो से उज्जैन जाएंगे लोग, मेट्रोपॉलिटन सिटी बनेगा इंदौर

इंदौर। *मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इंदौर में मेट्रो ट्रेन के ट्रायल रन को हरी झंडी दिखाई। सीएम खुद मेट्रो में सवार हुए और गांधी नगर से सुपर कॉरिडोर स्टेशन 3 तक छह किलोमीटर का सफर किया। वे पायलट केबिन में भी पहुंचे। वहां खड़े होकर बाहर का नजारा देखा। ट्रायल रन में मेट्रो की स्पीड 15 से 20 किलोमीटर प्रतिघंटा रही।*

सीएम शिवराज सिंह ने कहा, 5-6 महीने में मेट्रो ट्रेन का रेगुलर संचालन शुरू कर दिया जाएगा। मेट्रो का सफर सुगम, सुरक्षित, सुविधापूर्ण और सस्ता है। यह सुंदर भी है और सस्टेनेबल भी।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने शनिवार शाम को गांधी नगर स्टेशन पर ट्रायल के लिए पूजन किया। इससे पहले कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सीएम ने कहा कि मेट्रो केवल इंदौर तक नहीं रहेगी। हमारा संकल्प है कि 2028 के सिंहस्थ में आप इंदौर से मेट्रो में बैठकर महाकाल बाबा के दर्शन करने जाएंगे। सीएम ने कहा कि इंदौर तेज गति से आगे बढ़ सके, इसके लिए इंदौर और आसपास के क्षेत्र को मेट्रोपॉलिटन अथॉरिटी बनाया जाएगा।

इंदौर ने टैंपो से मेट्रो तक का सफर तय कर लिया- मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि इंदौर मेरे सपनों का शहर है। इंदौर ने टैंपो से मेट्रो तक का सफर तय कर लिया है। यह नई परिवहन क्रांति है, जो अमीर और गरीब के बीच की खाई भी पाट देगी। हर वर्ग इसमें सफर कर सकेगा जो कि टू-व्हीलर के खर्च से भी सस्ता पड़ेगा।

सीएम ने कहा, मैं मेट्रो रेल के एमडी से कहना चाहता हूं कि 5 से 6 महीने में ही इसे यात्रियों के साथ चलाना शुरू कर देवें। इंदौर से यह मेट्रो पीथमपुर और उज्जैन तक चलेगी। सर्वे चल रहा है।

2028 में आप उज्जैन सिंहस्थ में इंदौर से मेट्रो में बैठकर जाएंगे, यह मेरा संकल्प है।%

सीएम ने मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन की तारीफ करते हुए कहा कि पिछली सरकार ने इस प्रोजेक्ट को ठंडे बस्ते में पटक दिया था, लेकिन हमने इसे युद्ध स्तर पर शुरू किया। इंदौर में 6.3 किमी का काम 484 दिन में पूरा कर लिया। 18 दिन में ट्रैक का इलेक्ट्रिफिकेशन किया। 5 माह में कोचेस बनवाए। पूरी मेट्रो टीम को बधाई।

शहर में चला श्रमदान अभियान

नशा मुक्ति के लिए सख्ती और समझाइश दोनों जरूरी-कलेक्टर

नशा विरोधी पेंटिंग प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण

इंदौर। कलेक्टर डॉ. इलैयाराजा टी ने कहा कि नशा मुक्ति के लिए सख्ती के साथ समझाइश भी जरूरी है। शहर में नशा मुक्ति के लिए जल्द ही विस्तृत कार्ययोजना तैयार कर अभियान चलाया जाएगा। कलेक्टर डॉ. इलैयाराजा टी अभिनव कला समाज सभागार में यूनिवर्सल पीस एंड सोशल डवलपमेंट सोसायटी द्वारा आयोजित नशा विरोधी पेंटिंग प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि तम्बाकु और शराब के बाद नशे ने कई क्षेत्रों में अपने पैर पसार लिए हैं। शहर में अलग-अलग किस्म के नशे किए जाने की लगातार शिकायतें मिल रही है और घटनाएं भी सामने आ रही है। इस मामले में पुलिस, जिला प्रशासन और सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर विस्तृत कार्ययोजना पर काम हो रहा है। कार्यक्रम के विशेष अतिथि थे यूनिवर्सल पीस एंड सोशल डवलपमेंट सोसायटी के अध्यक्ष डॉ. अनिल भंडारी, पूर्व उपमहाधिवक्ता अभिनव धनोडकर, बैंक ऑफ बड़ौदा के रीजनल डायरेक्टर मुकेश आनंद मेहरा, इंडेक्स मेडिकल यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. रामगुलाम राजदान एवं संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय श्रीमती सुचित्रा तिर्की। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्टेट प्रेस क्लब, मध्यप्रदेश के अध्यक्ष प्रवीण कुमार खारीवाल ने की। कार्यक्रम का संचालन शफी शेख ने तथा अंत में फायद पायस ने आभार व्यक्त किया।

222

कलेक्टर, मेयर ने सफाई कर दिया स्वच्छता का संदेश, गंदगी निकाली, कमिश्नर ने एकत्र किया ई वेस्ट

इंदौर। रविवार को शहर में श्रमदान अभियान शुरू किया। इसमें कलेक्टर डॉ. इलैया राजा टी, मेयर पुष्यमित्र भार्गव सहित जनप्रतिनिधियों व अधिकारियों ने अलग-अलग क्षेत्रों सफाई कर स्वच्छता का संदेश दिया। ऐसे ही कमिश्नर मालसिंह भयडिया व निगम कमिश्नर निगम कमिश्नर हर्षिका सिंह ने ई वेस्ट एकत्र किया और लोगों को जागरुकता का संदेश दिया।

कलेक्टर ने कलेक्टोरेट परिसर में सफाई की। इस दौरान उन्होंने ग्लब्स पहने और नाली में उतरकर गंदगी निकाली और झाड़ू लगाई। इस मौके पर अन्य लोगों ने भी स्वच्छता के प्रति प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संकल्प को मजबूत करते हुए पूरे जज्बे के साथ सफाई की और अभियान का हिस्सा बने। मेयर पुष्यमित्र भार्गव ने कैट परिसर में सफाई की। उनके साथ रहवासियों द्वारा अपने घर का ई वेस्ट भी नगर निगम को दिया। इस पर उनके साथ कैट के सीनियर साइंटिस्ट के साथ रहवासियों ने भी सफाई की। इसी तरह अन्य क्षेत्रों में भी यह अभियान चलाया गया। एमआईसी सदस्यों ने भी अलग-अलग क्षेत्रों श्रमदान कर स्वच्छता के प्रति जागरुकता का संदेश दिया।

मेयर द्वारा स्वच्छता ही सेवा अभियान के साथ निगम की स्वच्छता की अनूठी पहल करते हुए चलाए गए ई वेस्ट संग्रहण अभियान के क्रम में कैट परिसर में रहवासियों के घर जा जाकर घर से निकलने वाले अनुपयोगी ई वेस्ट जिसमें पुराने मोबाइल, टीवी, चार्जर, बैटरी एवं अन्य इलेक्ट्रॉनिक सामान का संग्रहण करते हुए नागरिकों को स्वच्छता अभियान से जुड़ने और अनुपयोगी सामान निगम के डोर टू डोर कचरा संग्रहण वाहन में देने की अपील भी की गई।

मेयर ने कहा कि शहर के जागरुक नागरिकों के सहयोग से स्वच्छता अभियान सफल रहा है। आज जनप्रतिनिधियों, रहवासी संगठन, धार्मिक संगठन, सामाजिक संगठन, व्यापारिक संगठन, शैक्षणिक संस्थान, बैकिंग संस्थान, स्व-सहायता संगठनों ने मिलकर अपने घर के आसपास, उद्यान, सार्वजनिक स्थान, प्रमुख चौराहों, धार्मिक स्थलों पर 1 घंटे का श्रमदान किया।

शहर में स्मार्ट मीटरीकृत बिजली उपभोक्ता 2.10 लाख हुए

इंदौर। शहर में स्मार्ट मीटर से जुड़े बिजली उपभोक्ताओं की संख्या दो लाख 10 हजार के पार पहुंच गई है। वहीं कंपनी क्षेत्र में चार लाख 48 हजार स्मार्ट मीटर लग गए हैं। मध्यप्रदेश पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के प्रबंध निदेशक श्री अमित तोमर ने बताया कि स्मार्ट मीटर लगाने का काम तेजी से चल रहा है। इंदौर शहर में स्मार्ट मीटर वाले करीब 77 हजार उपभोक्ता ऐसे है, जिन्हें राज्य शासन के आदेशानुसार गृह ज्योति योजना में मात्र एक रूपए यूनिट के हिसाब से प्रथम सौ यूनिट बिजली मात्र सौ रूपए में प्रदान की जा रही है। श्री तोमर ने बताया कि इंदौर शहर में 10 किलोवाट से उपर की श्रेणी के

सभी 20 हजार उपभोक्ताओं के यहां स्मार्ट मीटर लगाए जा चुके है। शहर में अब तक कुल दो लाख 10 हजार स्मार्ट मीटर लगाए जा चुके हैं। श्री तोमर ने बताया कि इंदौर के बाद सबसे ज्यादा अत्याधुनिक स्मार्ट मीटर उज्जैन में करीब 75 हजार लगे हैं। वहीं रतलाम शहर में लगभग 62 हजार, देवास शहर में 36 हजार स्मार्ट मीटर लगाए जा चुके है। श्री तोमर ने बताया कि कंपनी का महू शहर सर्वप्रथम मप्र का पहला पूर्ण स्मार्ट मीटरीकृत शहर बना था, दूसरे क्रम में गत माह खरगोन शहर पूर्ण स्मार्ट मीटरीकृत हुआ है। उपरोक्त दोनों पूर्ण स्मार्टमीटरीकृत शहर में करीब 58 हजार मीटर स्थापित किए गए हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी जयश्री जैन द्वारा अपनी दुनिया प्रिंटर्स 13, प्रेस कॉम्प्लेक्स ए.बी. रोड इंदौर से मुद्रित एवं 22, प्रेस काम्पलेक्स, प्रेस हाऊस, ए.बी. रोड इंदौर 452008 से प्रकाशित। प्रधान संपादक- डॉ. राजेश जैन, मो. 9425322301 (डाक पंजीयन MP/IDC/1462/2016-2019)